देवउठनी एकादशी व्रत कथा

प्राचीनकाल में किसी नगर में एक राजा शासन करता था। राजा बड़ा ही धर्मपरायण और पराक्रमी था। उसके राज्य में उसकी प्रजा भी दान धर्म और सात्विक कार्यों मे विश्वास करती थी। एकादशी के दिन राजा और पूरी नगरी के लोग व्रत रखते थे। कोई भी अन्न गृहण नहीं करता था। इस तरह पूर्ण सत्विकता और सादगी से राजा अपने नगर में शासन करता था।

एक बार राजा के दरबार में कोई परदेशी युवक आया और राजा से नौकरी की गुहार करने लगा। परदेशी युवक बोला " हे ! राजाधिराज मैं बहुत दूर से आपसे मदद

मांगने आया हूँ। मेरे परिवार में मैं ही कमाने वाला हूँ। कृपया मेरी सहायता कीजिए और मुझे महल में नौकरी दीजिए। मैं कोई भी कार्य करने को तैयार हूँ। "

राजा को युवक की दशा पर तरस आया और राजा ने उसकी मदद करने की सोची। युवक की बात सुनकर राजा बोला " हे नौजवान ! हम तुम्हें महल में नौकरी देंगे लेकिन एक शर्त पर। एकादशी के दिन हमारे पूरे नगर में सारी प्रजा व्रत रखती है। तुम्हें भी एकादशी को व्रत रखना होगा, एकादशी को तुम्हें अन्न नहीं मिलेगा। " युवक ने बड़ी सहजता से राजा की बात मान ली। युवक ने सोचा एक दिन भूखा रहना कौनसी बड़ी बात है।

उसके बाद युवक राजा के महल में नौकरी करने लगा। युवक हर कार्य को बड़ी निपूर्णता से करता था। राजा भी युवक की कार्यकुशलता और कर्मनिष्ठा से खुश थे। समय बीतता गया और एकादशी की तिथि आई। पूरे नगर में खुशी का माहौल था। राजा और पूरी प्रजा ने व्रत रखा और सब फलाहार करने लगे। शाम होते होते युवक को भूख लगने लग गई तो उसने राजा से कहा " हे राजन ! अब मुझसे और भूख सहन नहीं होती कृपया करके मुझे भोजन दे वरना मैं और मेरे भगवान दोनों भूखे मर जाएंगे । "

राजा ने युवक द्वारा भगवान के भूखे होने की बाद को मज़ाक समझा। राजा ने युवक को नौकरी देने की शर्त याद दिलाई और कहा की एकादशी के दिन पूरे राज्य में कोई भोजन नहीं करता। लेकिन युवक अपनी जिद पर अड़ा रहा और बार बार अन्न माँगता रहा। आखिरकार राजा को युवक पर तरस आ गया और उसने युवक को आटा , दाल चावल आदि दे दिया। युवक अनाज लेकर महल से नदी किनारे आ गया।

युवक ने भोजन पकाया और नदी की तरफ आवाज दी " भोजन तैयार है प्रभु ! आइए भोजन करते हैं। " युवक के भोजन के निमंत्रण देते ही भगवान चतुर्भुज नदी किनारे प्रकट हो गए। भगवान ने बड़े प्रेम भाव से युवक से साथ वही सादा भोजन किया और भोजन करके अंतरध्यान हो गए। युवक हमेशा की तरह अगले दिन महल

https://setmygadget.com

में नौकरी करने लगा। अगली एकादशी भी आ गई और फिर राजा और पूरी प्रजा ने व्रत रखा। युवक फिर राजा के पास गया और बोला।

"राजाधिराज पिछली एकादशी को आपने जो अन्न दिया था उससे बड़ा ही स्वादिस्ट भोजन बना था। हम दोनों तो उँगलिया चाटते ही रहा गए और भूख भी शांत नहीं हुई। राजा ने युवक से पूछा " आप दोनों कौन ? तुम तो अकेले ही हो इस राज्य में तुम्हारा परिवार तो यहाँ है ही नहीं । " तब युवक बोला " हाँ राजन मेरा परिवार यहाँ नहीं है लेकिन मैं और भगवान दोनों साथ भोजन करते हैं। पिछली एकादशी को मेरे साथ साथ भगवान भी भूखे रह गए। "

युवक की बात सुनकर राजा हंसने लगा और बोला " क्यूँ हमे मूर्ख बना रहे हो। मैं और मेरी पूरी प्रजा एकादशी का व्रत रखते है और भगवान को पूजते हैं। पूरे राज्य में केवल तुम ही हो जिसने भगवान को खुश करने के लिए व्रत नहीं रखा। भला भगवान तुम्हारे साथ भोजन क्यूँ करेंगे? युवक बोला " मैं असत्य नहीं बोल रहा हूँ राजन ! अगर आपको मेरी बातों पर विश्वास नहीं है तो आप मेरे साथ नदी किनारे चले और स्वयं अपनी आँखों से देख लें। " राजा युवक के साथ अन्न ,चावल इत्यादि लेकर नदी किनारे चल पड़ा ।

नदी किनारे जाकर राजा एक पेड़ के पीछे छुप गया और सब कुछ देखने लगा। युवक ने खाना बनाने लगे खाना बनने के बाद नदी की तरफ जाकर आवाज दी " भगवन ! भोजन तैयार है आइए साथ में भोजन करते हैं। " लेकिन भगवान नहीं आए। युवक ने बहुत बार भोजन का निमंत्रण दिया लेकिन भगवान प्रकट न हुवे। तब युवक बोला " भगवान आप भोजन करने नहीं आए तो मैं इस नदी में कूदकर अपनी जान दे दूंगा। ऐसा कहकर युवक नदी की तरफ बढ़ने लगा । युवक नदी में कूदने ही वाला था की भगवान चतुर्भुज प्रकट हुवे।

भगवान ने बड़ी ही सादगी से युवक के साथ में भोजन किया और भोजन करके अंतर ध्यान हो गए। राजा पेड़ के पीछे छुपकर सब कुछ देख रहा था। तब राजा को समझ में आया हूँ भगवान को सचे मन और पूरी श्रद्धा से सूकी रोटी भी अर्पण

https://setmybadge.com

करों तो भगवान सहर्ष स्वीकार करते हैं। लेकिन झूठी आस्था से कितने भी व्रत उपवास रखो चाहे भगवान को 56 प्रकार के भोग लगाओ प्रभु कभी स्वीकार नहीं करेंगे।

यह भी पढ़ें - भगवान शालिग्राम और माता तुलसी के विवाह की कथा और विधि।

https://setmygadget.com